प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 3 (2019–20)

हिन्दी–अ कोड (002)

कक्षा–9

निर्धारित समय– 3 घंटे अधिकतम अंक – 80

सामान्य निर्देशः–

1. इस प्रश्न–पत्र में चार खंड हैं– क, ख, ग और घ।
2. सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।

खण्ड – क (अपठित अंश) 15

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 8

शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए तथा सुखी और शांतिपूर्वक जीवनयापन के लिए संतोष आवश्यक है। चाणक्य ने कहा है– ''संतोष त्रिषु कर्त्तव्य–स्वदारे भोजने धने'' अर्थात् हमें तीन चीजों में परमसंतोष अनुभव करना चाहिए– 'अपनी पत्नी में, अपने भोजन में और अपने धन में। समाज में जितनी भी समस्यायें हैं उनके पीछे हमारा संतोषी न होना ही कारण है। यदि हम उपर्युक्त तीनों आवेदनों में संतोष अनुभव करेंगे तो कोई कलह उत्पन्न नहीं होगा। यदि अपनी पत्नी से सन्तुष्ट रहकर सात जन्मों का अटूट बंधन मानकर संतोष करेंगे तो पारिवारिक रिश्तों पर कुठाराघात का कोई स्थान न होगा। इसी प्रकार यदि अपने भोजन में संतोष रहा तो स्वाभाविक रूप से क्रोध का आवेग न रहेगा। अतः हमारे जीवन के लिए आवश्यक है–संतोष करना। संतोष करना वर्तमान काल की सामयिक आवश्यक प्रासंगिकता है। संतोष का शाब्दिक अर्थ है– 'मन की वह वृत्ति या अवस्था जिसमें अपनी वर्तमान दशा में ही मनुष्य पूर्ण सुख का अनुभव करता है।'

1. संतोष किस लिए आवश्यक है? 2

उत्तर : शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए एवं सुखी और शांतिपूर्ण जीवन बिताने के लिए संतोष आवश्यक है।

2. समाज में उत्पन्न समस्याओं का क्या कारण है? 2

उत्तर : समाज में उत्पन्न समस्याओं का कारण हमारा संतोषी न होना है।

3. चाणक्य ने क्या कहा है? 2

उत्तर : हमें अपनी पत्नी में, अपने भोजन में तथा अपने धन में संतोष का अनुभव करना चाहिए।

4. 'आवेग' शब्द में उपसर्ग और मूल शब्द अलग कीजिए। 1

उत्तर : उपसर्ग – आ, मूल शब्द – वेग

5. गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर : संतोष

2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए– 7

मुहल्ले में वह शांति बेचता है।
लाउडस्पीकरों की
एक दुकान है उसकी,
मेरे घर से बिल्कुल लगी हुई।
सुबह–सुबह मुँह अँधेरे दो घण्टे,
लाउडस्पीकर न बजाने के,
वह मुझसे सौ रुपये महीने लेता है।
वह जानता है कि मैं,
उन अभागों में से हूँ।
जो शांति के बिना,
जीवित नहीं रह सकते।
वह जानता है कि आने वाले वक्तों में,
साफ पानी और साफ हवा से भी ज्यादा।
शांति की किल्लत रहेगी,
वह जानता है।
कि क्रांति के जमाने अब लद चुके,
अब उसे अपना पेट पालने के लिए।
शांति का धंधा अपनाना है।
मैं उसका आभारी हूँ,
भारत जैसे देश में जहाँ कीमतें आसमान छू रही
सौ रुपये महीने की दर से
अगर दो घण्टा रोज भी शांति मिल सके,
तो महँगी नहीं।

1. कवि दुकानदार को सौ रुपये महीने क्यों देता है? 2

उत्तर : कवि दुकानदार को सौ रुपए महीने भर लाउडस्पीकर न बजाने के लिए देता है।

2. कवि दुकानदार का आभारी क्यों है? 2

उत्तर : कवि दुकानदार का इसलिए आभारी है क्योंकि आज सभी चीजों की कीमतें बहुत बढ़ गई हैं ऐसे समय

में सौ रुपए महीने की दर से प्रतिदिन दो घंटे की शांति महँगी नहीं है।

3. काव्यांश में किस भाव की प्रधानता है? 1

उत्तर : काव्यांश में व्यंग्य–भाव की प्रधानता है।

4. कवि को आने वाले वक्त में किसकी किल्लत रहेगी। 1

उत्तर : कवि को आने वाले वक्त में शांति की किल्लत रहेगी।

5. दुकानदार क्या जानता है? 1

उत्तर : दुकानदार जानता है कि कवि शांति के बिना जीवित नहीं रह सकता।

अथवा

क्यों तुमने निज गीत–विहग को
दिया न जग का दाना–पानी,
आज आर्त अंतर से उसके
उठती करुणा कातर–वाणी।
शोभा के स्वर्णिम पिंजर में,
उसके प्राणों को बंदी कर।
तूने क्यों उसके जीवन की,
जीवन–मुक्ति ली पल भर में हर।
नीड़ बनाता वह डाली पर,
फिरता आँगन में कलरव भर।
उसे प्रीति के गीत सिखाने,
दग्ध कर दिया तुमने अंतर।
उड़ता होता क्या न गगन में?
चुगता होता दाने भू पर।
अपना उसे बनाने तुमने,
लिए जीवन के पंख ही कुतर।
क्यों तुमने निज गीत–विहग को,
दिया न भू का दाना–पानी।
उसके आर्त हृदय से फिर–फिर,
उठती दुख की कातर–वाणी।

1. गीत रूपी विहग को कवि ने कहाँ बंदी बनाया है?

उत्तर : गीत रूपी विहग को कवि ने शोभा (सौन्दर्य) के स्वर्णिम पिंजर में बंदी बनाया है।

2. गीत रूपी विहग की वाणी कैसी है?

उत्तर : गीत रूपी विहग की वाणी भय एवं करुणा से भरी हुई है।

3. 'आज आर्त अंतर से उसके' पंक्ति में कौन–सा अलंकार है?

उत्तर : अनुप्रास अलंकार।

4. मनुष्य ने गीत रूपी विहग को अपना बनाने के लिए क्या किया?

उत्तर : मनुष्य ने गीत रूपी विहग को अपना बनाने के लिए उसके पंख कुतर दिए।

5. गीत रूपी के आर्त (दुखी) हृदय से कैसी वाणी उठ रही है?

उत्तर : गीत रूपी विहग के आर्त हृदय से दुख की कातर (करुणाभरी) वाणी उठ रही है।

खण्ड – ख (व्यावहारिक व्याकरण) 15

3. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए– 7

1. किन्हीं दो शब्दों में प्रयुक्त उपसर्ग एवं मूल शब्द अलग करके लिखिए– 2

अधखिला, सुगंध, औगुण

उत्तर :

	उपसर्ग	मूलशब्द
1.	अध	खिला
2.	सु	गंध
3.	औ	गुण

2. किन्हीं दो शब्दों में प्रयुक्त प्रत्यय एवं मूल शब्द अलग करके लिखिए– 2

जहरीला, पाठक, सृजनहार

उत्तर :

	मूलशब्द	प्रत्यय
1.	जहर	ईला
2.	पाठ	अक
3.	सृजन	हार

3. किन्हीं तीन शब्दों के विग्रह करके समास का नाम लिखिए– 3

यथासमय, लोक–परलोक, चतुरानन, चौराहा

उत्तर :

	विग्रह	समास का नाम
1.	समय के अनुसार	अव्ययीभाव
2.	लोक और परलोक	द्वंद्व
3.	चार आनन हैं जिसके अर्थात् ब्रह्माजी	बहुव्रीहि
4.	चार राहों का समाहार	द्विगु

4. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए– 4

1. अर्थ के आधार पर किन्हीं दो वाक्यों में भेद लिखिए–2

1. प्रातः होते ही पक्षी कलरव करने लगे।

उत्तर : विधानवाचक।

2. संभवतः इस साल ये पुल बन जायेगा।

उत्तर : संदेहवाचक।

3. यदि खिलौने न टूटते तो बच्चा न रोता।

उत्तर : संकेतवाचक।

2. निर्देशानुसार किन्हीं दो वाक्यों में परिवर्तन करके लिखिए– 2

1. किसान फसल काट रहा है। (निषेधवाचक में)
उत्तर : किसान फसल नहीं काट रहा है।
2. रोहन कल विद्यालय नहीं गया था। (संदेहवाचक में)
उत्तर : शायद रोहन कल विद्यालय जाएगा।
3. प्रभात प्रतिदिन व्यायाम करता है। (आज्ञावाचक में)
उत्तर : प्रभात, प्रतिदिन व्यायाम करो।

5. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं चार के अलंकार भेद पहचान कर लिखिए– 4

1. इस सोते संसार बीच,
जगकर, सजकर रजनी वाले।
उत्तर : मानवीकरण अलंकार।
2. चरण–कमल सुशोभित हो रहे।
उत्तर : रूपक अलंकार।
3. ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं।
उत्तर : अनुप्रास अलंकार।
4. मखमली पेटियों–सी लटकीं।
उत्तर : उपमा अलंकार।
5. हिमकणों से पूर्ण मानो हो गए पंकज नए।
उत्तर : उत्प्रेक्षा अलंकार।

खण्ड – ग

(पाठ्य–पुस्तक एवं पूरक पाठ्य पुस्तक) 30

6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 5

मैं समझता हूँ। तुम्हारी अँगुली का इशारा भी समझता हूँ और यह व्यंग्य–मुस्कान भी समझता हूँ। तुम मुझ पर या हम सभी पर हँस रहे हो। उन पर जो अँगुली छिपाए और तलुआ घिसाए चल रहे हैं, उन पर जो टीले को बरकाकर बाजू से निकल रहे हैं। तुम कह रहे हो–मैंने तो ठोकर मार–मारकर जूता फाड़ लिया। अँगुली बाहर निकल आईं, पर पाँव बच रहा और मैं चलता रहा मगर तुम अँगुली को ढाँकने की चिंता में तलुवे का नाश कर रहे हो। तुम चलोगे कैसे?

1. प्रेमचंद किन पर व्यंग्य कर रहे हैं? 2
उत्तर : प्रेमचंद उन सभी लोगों पर व्यंग्यपूर्ण हँसी कर रहे हैं जो ऊपर से तो अपनी कमजोरियों को छिपा रहे हैं किन्तु अंदर ही अंदर उन कमजोरियों से दुखी भी हैं। वे उन पर भी हँस रहे हैं जो सामने आई कुरीतियों और मुसीबतों से बचकर उनके आस–पास से निकल रहे हैं।
2. अँगुली छिपाने और तलुआ घिसाने का क्या आशय है? 2
उत्तर : अँगुली छिपाने का आशय है– अपनी दुर्दशा को ढाँकना और तलुआ घिसाने का आशय है–अंदर ही अंदर कमजोर होना। अपनी शक्तियों को नष्ट करना।
3. प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है? इसके लेखक का नाम भी लिखिए। 1
उत्तर : पाठ–प्रेमचंद के फटे जूते, लेखक– हरिशंकर परसाई।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 8

1. महादेवी के परिवार में कन्याओं के साथ कैसा व्यवहार किया जाता था? 2
उत्तर : महादेवी के बाबा और माता–पिता कन्याओं के साथ बहुत अच्छा व्यवहार करते थे। बाबा ने कुलदेवी दुर्गा जी की आराधना करके महादेवी को माँगा था। महादेवी के माता–पिता ने भी उनको खूब पढ़ाया–लिखाया, अच्छे संस्कार दिए। परन्तु उनके पुरखों का कन्याओं के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार था। 200 वर्षों से उनके कुल में यह कुपरंपरा थी कि कन्याओं को जन्म लेते ही मार दिया जाता था।
2. 'प्रेमचंद के फटे जूते' पाठ के आधार पर बताइए कि पर्दे के महत्त्व पर लेखक और प्रेमचंद के क्या विचार थे? 2
उत्तर : लेखक के विचार के अनुसार, जीवन के लिए पर्दा जरूरी है। अपनी कमजोरियों को ढँककर रखना चाहिए। प्रेमचंद जी कहते हैं–जैसे हो, वैसे दिखो। जीवन में कोई पर्दा न रखें।
3. सालिम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने की बजाए अथाह सागर बनकर उभरे थे। 'साँवले सपनों की याद' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 2
उत्तर : सालिम अली प्रकृति के खुले संसार में खोज करने के लिए निकले थे। उन्होंने कभी अपने को किसी सीमा में कैद नहीं किया। वे एक टापू की तरह किसी स्थान विशेष या पशु–पक्षी विशेष से नहीं बँधे रहे। उन्होंने अथाह सागर की तरह प्रकृति में जो–जो अनुभव किए, उन्हें संजोकर रखा और उनका कार्यक्षेत्र बहुत बड़ा था।
4. तिब्बत में यात्रियों के आराम के लिए क्या–क्या व्यवस्थायें हैं? 'ल्हासा की ओर' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए। 2
उत्तर : तिब्बत में यात्रियों के आराम के लिए सबसे अच्छी बात यह है कि यहाँ छुआछूत या ऊँच–नीच का कोई स्थान नहीं है। यात्री किसी भी घर में जाकर घर की बहू या सास को चाय–पत्ती देकर चाय बनवा सकते हैं। यहाँ की स्त्रियाँ न तो पर्दा करती हैं, न पुरुषों से दूरी बनाकर रखती हैं।
5. 'दो बैलों की कथा' पाठ में गुप्त–शक्ति से लेखक का क्या तात्पर्य हैं? 2
उत्तर : लेखक मुंशी प्रेमचंद ने कहा है कि जानवरों में गुप्त शक्ति होती है। उनमें खतरे को भाँपने की क्षमता

होती है। वे अपने शरीर को टटोल–टटोलकर देखने वाले दड़ियल आदमी की बुरी नीयत को समझ गए थे। उन्हें पता चल गया था कि यह आदमी उनका शत्रु है, मित्र नहीं।

8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 5

मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरें, पहिरौंगी।
ओढ़ि पितंबर लै लकुटी बन गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी।।
भावतो वोहि मेरो रसखनि सों तेरे कहे सब स्वाँग करौंगी।
या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी।।

1. गोपी क्या–क्या करने को तैयार हो गई है? 2

उत्तर : गोपी कृष्ण का पूरा स्वाँग करने के लिए तैयार हो गई है। वह कृष्ण से अथाह प्रेम करती है। वह माथे पर मोर–मुकुट, गले में गुंजों की माला, हाथों में लाठी और शरीर पर पीले वस्त्र धारण करने के लिए तैयार हो गई है।

2. गोपी होठों पर मुरली रखने से क्यों मना कर देती हैं? 2

उत्तर : गोपी मुरली के प्रति सौतिया डाह रखती है। कृष्ण हमेशा मुरली बजाने में लीन रहते हैं इसलिए वे गोपी की ओर ध्यान नहीं देते हैं। इसलिए वह मुरली से ईर्ष्या करती है और उसे अपने होठों पर रखने से मना कर देती है।

3. प्रस्तुत काव्यांश किस पाठ से लिया गया है एवं इसके रचयिता का नाम लिखिए। 1

उत्तर : पाठ–सवैये, रचयिता–रसखान।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 8

1. 'कैदी और कोकिला' कविता के आधार पर जेल में बंदी कैदियों की दयनीय दशा का वर्णन कीजिए। 2

उत्तर : जेल में बंदी कैदियों की दशा अत्यंत दयनीय थी। काल कोठरी में जंजीरों से बाँधकर रखा जाता था। उन्हें न तो पूरा खाना दिया जाता था, न ही किसी से मिलने दिया जाता था। उनसे कठोर परिश्रम करवाया जाता था। कभी तो उन्हें कोल्हू के बैल की तरह जोत दिया जाता था तो कभी पत्थर तुड़वाए जाते थे।

2. सरसों को 'सयानी' कहकर कवि क्या कहना चाहता है? 'चंद्रगहना से लौटती बेर' कविता के आधार पर उत्तर दीजिए। 2

उत्तर : सरसों को 'सयानी' कहकर कवि यह कहना चाहता है कि अब सरसों की फसल पककर तैयार हो गई है और उसका अब पूर्ण रूप से विकास हो चुका है।

3. मेघों के आने पर पेड़ अपनी प्रसन्नता किस प्रकार व्यक्त करते हैं? 'मेघ आए' कविता के आधार पर उत्तर दीजिए। 2

उत्तर : मेघों के आने पर पेड़ प्रसन्नता से लहराते हुए झुक जाते हैं। वे मेहमान का स्वागत करते हुए झुककर मेघों की ओर निहारने लगते हैं।

4. 'यमराज की दिशा' कविता में कवि ने यमराज के सभी दिशाओं में 'आलीशान महल' तथा उनमें उनके 'दहकती आँखों से विराजने' की बात क्यों कही है? 2

उत्तर : कवि दक्षिणपंथी विचारधारा का कट्टर विरोधी है इसलिए उसे दक्षिण दिशा यमराज की दिशा दिखाई देती है। उस दिशा में दहकती आँखों वाले यमराज अपने आलीशान महलों में बैठे मौज कर रहे हैं।

5. आपके विचार से बच्चों को काम पर क्यों नहीं भेजना चाहिए? 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' कविता के आधार पर उत्तर लिखिए। 2

उत्तर : मेरे विचार से बच्चों का बचपन अनमोल होता है। बच्चों को बचपन में खेलने–कूदने, लिखने–पढ़ने का अवसर देना चाहिए। पैसा कमाने का बोझ उनके कंधों पर नहीं डालना चाहिए। इससे बच्चों का बचपन बरबाद हो जाता है और उनके व्यक्तित्व का उचित विकास भी नहीं हो पाता है।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 4

1. आज माटी वाली बुढ़ढें को कोरी रोटियाँ नहीं देगी– इस कथन के आधार पर माटी वाली के हृदयगत भावों को अपने शब्दों में लिखिए। 2

उत्तर : माटी वाली एक गरीब और मजबूर पत्नी है। उसका पति बूढ़ा है। वह काम करने योग्य नहीं है। अतः वह अपनी पत्नी पर निर्भर है। माटी वाली भी उसका पूरा ध्यान रखती है। वह उसके लिए पहले रोटी बचा. कर रखती है, बाद में खुद खाती है। वह अपने पति के प्रति गहरा प्रेम और करुणा का भाव रखती है। क्योंकि उसका पति दयनीय दशा में है। अतः उसका ध्यान रखना वह अपना परम कर्त्तव्य समझती है।

2. 'भूख मीठी कि भोजन मीठा' यह बात कहने से लेखक का क्या आशय है? 'माटी वाली' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए। 2

उत्तर : इस बात से यह आशय है कि भोजन मीठा या स्वादिष्ट नहीं हुआ करता, वह भूख के कारण स्वादिष्ट लगता है। इसलिए रोटी चाहे रूखी हो या साग के साथ या चाय के साथ वह भूख के कारण मीठी लगती है। अतः रोटी के स्वाद का वास्तविक कारण भूख है।

3. 'मेरे संग की औरतें' पाठ के आधार पर लेखिका की नानी के मूल्यों का आकलन कीजिए। 2

उत्तर : लेखिका मृदुला गर्ग की नानी अनपढ़, पर्दानशी और पारंपरिक औरत थीं। उनके मूल्यों का आकलन इन शीर्षकों के अन्तर्गत किया जा सकता है–

1. **स्वतंत्रता से लगाव–** लेखिका की नानी को स्वतंत्रता से गहरा लगाव था। उन्होंने अपनी जिन्दगी को विलायती रीति–रिवाज से जीने की जगह अपनी मर्जी से जिया।
2. **स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति आदर–** लेखिका की नानी ने अपनी इच्छा स्वतन्त्रता सेनानी प्यारेलाल शर्मा को बताई और लेखिका की माँ की शादी गरीब स्वतंत्रता सेनानी से कर दी।
3. **स्वतंत्र विचारों को स्वीकारना–** लेखिका की नानी स्वतंत्र विचारों वाली महिला थी। उन्होंने अपने पति के जीवन में कभी दखल नहीं दिया।
4. **राष्ट्र का स्वाभिमान–** लेखिका की नानी का देश की आजादी के प्रति जुनून था।

खण्ड – घ (लेखन) 20

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200–250 शब्दों में निबन्ध लिखिए– 10

(1) विज्ञान : वरदान या अभिशाप

संकेत–बिन्दु : प्रकृति पर विजय • मनुष्य के लिए वरदान • जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियाँ • उत्पन्न समस्याएँ • सदुपयोग या दुरुपयोग–हमारी जिम्मेदारी • निष्कर्ष।

(2) दूरदर्शन के लाभ–हानि

संकेत–बिन्दु : दूरदर्शन का अर्थ एवं परिचय • दूरदर्शन की उपयोगिता • दूरदर्शन की लोकप्रियता के कारण • दूरदर्शन से होने वाली हानियाँ • निष्कर्ष।

(3) खेल और स्वास्थ्य

संकेत–बिन्दु : खेलों की उपयोगिता • खेल और स्वास्थ्य का सम्बन्ध • हमारा कर्त्तव्य • निष्कर्ष।

उत्तर :

(1) विज्ञान : वरदान या अभिशाप

संकेत–बिन्दु : प्रकृति पर विजय • मनुष्य के लिए वरदान • जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियाँ • उत्पन्न समस्याएँ • सदुपयोग या दुरुपयोग–हमारी जिम्मेदारी • निष्कर्ष।

1. **प्रकृति पर विजय–** वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण आज का युग विज्ञान का युग माना जाता है। विज्ञान ने प्रतिदिन नए आविष्कार करके मानव जीवन को सरल और आरामदायक बना दिया है। बटन दबाते ही विभिन्न वैज्ञानिक उपकरण आज्ञाकारी सेवक की भाँति हमारी सेवा में तत्पर रहते हैं। जिनके कारण मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में क्रांति आ गई है। आर्जी मानव ने विज्ञान के बल पर प्रकृति को भी अपनी दासी बना लिया है।
2. **मनुष्य के लिए वरदान–** विद्युत आविष्कार ने तो मानव जीवन को सुखों से भर दिया है। सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक मानव जिस प्रकार के उपकरणों–साधनों का प्रयोग करता है वे सभी विज्ञान की ही देन है। आज मानव को गर्मी से बचने के लिए पंखे, एयरकंडीशनर, रेडियो, चलचित्र, टेलीविजन, बल्ब, रसोई के उपकरण आदि विज्ञान की ही देन है।

   कम्प्यूटर, फैक्स, मोबाइल फोन, सैटेलाइट संचार व्यवस्था आज इतनी सामान्य हो गई है कि हमें सारे विश्व की सूचनाएँ एक ही क्षण में उपलब्ध हो जाती हैं। सारी मानव–जाति को एक–दूसरे के निकट लाने में विज्ञान का अद्‌भुत योगदान है। कृषि के क्षेत्र में नई–नई तकनीकों, रसायनों की खोज ने उपज को चौगुना कर दिया है।

   मनुष्य ने विज्ञान की सहायता से नदियों को बाँधकर नहरें निकाल दी हैं, बड़े–बड़े पर्वतों का सीना चीरकर सुरंगें बना दी हैं। समुद्र के सीने से आज का सबसे आवश्यक तत्व 'पेट्रोलियम' निकाल लेना मानव की एक बड़ी उपलब्धि है।

   मानव की सुविधा के लिए रेल, मोटर, वायुयान, जलयान, बड़े–बड़े भवन सभी सुविधायें बड़े–बड़े इंजीनियर्स की ही तो देन है चिकित्सा के क्षेत्र में नई–नई औषधियों की खोज, नई–नई तरह की मशीनों का ऑपरेशनों में प्रयोग आज मानव जीवन के लिए वरदान बनकर सामने आया है। लेजर–तकनीक से इलाज ने तो आज सचमुच चमत्कृत ही कर दिया है। विज्ञान की आज की सबसे बड़ी देन तो कम्प्यूटर है। कम्प्यूटराइज्ड रोबोटों की मदद से आज ऐसे–ऐसे कार्य होने लगे हैं, जिनको मानव शायद ही कभी कर पाता। आज मनुष्य ने चन्द्रमा ही नहीं सौरमण्डल के दूसरे ग्रहों की भी खोज करना आरम्भ कर दिया है।
3. **जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियाँ–** विज्ञान ने चिकित्सा का क्षेत्र हो या इंजीनियरिंग का, भौतिक विज्ञान की बात हो या रसायान विज्ञान की, सभी क्षेत्रों में अपना प्रभुत्व स्थापित कर दिखाया है। विज्ञान ने मनुष्य को क्या–क्या नहीं दिया? आज बटन दबाते ही सारे सुख–साधन उपलब्ध हो जाते हैं सारी मानव–जाति को एक–दूसरे के निकट लाने में विज्ञान का अद्‌भुत योगदान है। शिक्षा के क्षेत्र में तो कम्प्यूटर एक वरदान बनकर ही सामने आया है। जल, थल, आकाश का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है जहाँ मनुष्य की पहुँच न हुई हो। कम्प्यूटर प्रत्येक क्षेत्र में मनुष्य का हितैषी बनकर सामने आया है।

4. **उत्पन्न समस्याएँ–** जहाँ विज्ञान ने मानव को इतने वरदान दिये हैं, वहीं अनेक समस्याएँ भी खड़ी कर दी है। विज्ञान ने मनुष्य को विनाश के साधन भी उपलब्ध करा दिए हैं। युद्ध के विनाशकारी उपकरण टैंक, बमवर्षक विमान, फाइटर–विमान, अणु–बम, विषैली गैसों तथा प्रदूषण के कारण पर्यावरण को खतरा भी विज्ञान की ही देन है। ध्वनि, जल, वायु प्रदूषण का जन्मदाता विज्ञान ही है। मानवता पर विश्वास रखने वाले व्यक्ति के मस्तक पर चिंता की रेखाएँ उभर आती है। वास्तव में विज्ञान अपने में निर्माण और सृजन के साथ विनाश एवं विध्वंस की शक्तियाँ समेटे हुए हैं।
5. **सदुपयोग या दुरुपयोग–हमारी जिम्मेदारी–** यदि मनुष्य वैज्ञानिक उपलब्धियों का दुरुपयोग करता है तो विनाश होगा ही। सदुपयोग या दुरुपयोग का सम्बन्ध विज्ञान से नहीं उसके उपयोगकर्त्ताओं पर निर्भर है। विज्ञान पर दोष लगाना तो सचमुच मूर्खता ही है। विज्ञान स्वयं मैं विनाशकारी नहीं है बल्कि वह तो आज की मानव संस्कृति के लिए वरदान बनकर ही सामने आया है।

   विष्णु सरीखा पालक है, शंकर जैसा संहारक।
   पूजा उसकी शुद्ध भाव से करो, आज से आराधक।।
6. **निष्कर्ष–** अंत में यही कहा है कि विज्ञान की शक्तियों का प्रयोग सोच–समझकर करना होगा क्योंकि अंकुश के अभाव में यह विनाशकारी बन जाता है।

(2) दूरदर्शन के लाभ–हानि

संकेत–बिन्दु : दूरदर्शन का अर्थ एवं परिचय • दूरदर्शन की उपयोगिता • दूरदर्शन की लोकप्रियता के कारण • दूरदर्शन से होने वाली हानियाँ • निष्कर्ष।

1. **दूरदर्शन का अर्थ एवं परिचय–** आज विज्ञान ने मानव को अनेक उपहारों से उपकृत किया है। विज्ञान ने मनोरंजन के क्षेत्र में भी ऐसे उपकरण तथा साधन प्रदान किए हैं जिन्होंने इस क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन कर दिया है। ऐसा ही उपकरण है–दूरदर्शन। दूरदर्शन का अर्थ है–दूर से दर्शन कराने वाला। त्रेता युग में संजय ने अंधे धृतराष्ट को उनके पास बैठाकर महाभारत युद्ध का आँखों देखा वर्णन सुनाया था। उस समय ऐसा प्रतीत हुआ था कि संजय ने अपनी दिव्यदृष्टि से महाभारत का युद्ध देखा, वह कोई चमत्कारी पुरुष था। आज वही कार्य दूरदर्शन के द्वारा संभव है। दूरदर्शन एक ऐसा साधन है जो देश–विदेश की घटनाओं को ज्यों–का–त्यों हमारी आँखों के सामने ला देता है।
2. **दूरदर्शन का उपयोगिता–** दूरदर्शन की उपयोगिता इतनी तेजी से बढ़ रही है, कि आज यह मनुष्य, परिवार और समाज की आवश्यकता बन गया है। यह ज्ञान एव मनोरंजन का अत्यन्त लोकप्रिय साधन बन गया है। इससे दिनभर का थका तन–मन उत्साह से भर उठता है तथा देश–विदेश की जानकारियाँ प्राप्त करता है। सात समुंदर पार घट रही घटनाओं को हमें दिखाता–सुनाता है। यह बच्चों के लिए जितना उपयोगी है उतना ही वृद्ध या अन्य आयुवर्ग के लोगों के लिए। हर प्रकार का कारोबार करने वाला व्यक्ति इससे अपनी मानसिक थकान भगाकर ऊर्जान्वित हो उठता है। इसके कार्यक्रम प्रातः से देर रात तक प्रसारित होते रहते हैं।
3. **दूरदर्शन की लोकप्रियता के कारण–** इस पर प्रसारित होने वाले विभिन्न कार्यक्रम– सबसे पहले बच्चों के कार्यक्रमों की बात करते हैं, इस पर एन. सी. आर. टी. द्वारा तैयार कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है जो उनकी शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करता है। छात्रों के लिए कहानी, गीत, नाटक, चुटकुलों का भी समय–समय पर प्रसारण किया जाता है। युवक–युवतियों के लिए विभिन्न धारावाहिक एवं फिल्में प्रसारित की जाती हैं, वहीं प्रौढ़ों और वृद्धों के लिए अनेक कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं। इसके अलावा मौसम सम्बन्धी जानकारी, राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय समाचार विद्वंतजनों से समसामयिक विषयों पर परिचर्या, खेलों का सजीव प्रसारण, किसानों का कार्यक्रम कृषि–दर्शन, विभिन्न प्रतियोगिता सम्बन्धी कार्यक्रम इसकी लोकप्रियता में चार चाँद लगाते हैं। दूरदर्शन पर समाज में फैली बुराइयों और कुरीतियों को दूर करने सम्बन्धी जन संदेश और कार्यक्रम भी प्रसारित किए जाते हैं। दूरदर्शन पर समाज में फैली बुराइयों और कुरीतियों को दूर करने सम्बन्धी जन संदेश और कार्यक्रम भी प्रसारित किए जाते हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा बनाए गए कार्यक्रमों के माध्यम से विज्ञान, गणित, भाषा, कृषि, कम्प्यूटर जैसे अनेक विषयों की शिक्षा नियमित रूप से दी जा रही है। दूरदर्शन पर विज्ञान के प्रयोगों, अंतरिक्ष सम्बन्धी नई जानकारी, प्रकृति के छिपे रहस्यों सम्बन्धी सूचनाएँ, देश–विदेश की घटनाओं सम्बन्धी जानकारी, खेल–कूद तथा अन्य समारोहों का सीधा प्रसारण दिखाया जाता है। हम घर बैठे विश्व के किसी भी कोने में होने वाले कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण देख सकते हैं। समुद्र की गहराइयों, पर्वत शृंखलाओं, वन्य–प्राणियों तथा प्रकृति के अन्य रहस्यों को साक्षात देख सकते हैं। दूरदर्शन ने पृथ्वी को एक परिवार बना दिया। आज दूरदर्शन व्यापार तथा विज्ञापन का भी प्रभावशाली माध्यम बन गया है। अच्छे–अन्छे धारावाहिक हमारी संस्कृति से हमारा

परिचय करा सकते हैं।

4. **दूरदर्शन से होने वाली हानियाँ–** दूरदर्शन से जहाँ इतने लाभ हैं वहीं इससे कुछ हानियाँ भी हैं, जिसका सर्वाधिक असर युवा पीढ़ी पर पड़ रहा है। इस पर प्रसारित कार्यक्रमों से सांस्कृतिक प्रदूषण बढ़ रहा है। भारतीय संस्कृति के मूल्यों का क्षरण हो रहा है, समाज में अश्लीलता बढ़ रही है। इसके कार्यक्रमों को देख युवावर्ग दिग्भ्रमित हो रहा है। वह चोरी, हत्या, अपहरण, आत्महत्या, बलात्कार के दृश्यों को देखकर विकृत मानसिकता का शिकार हो रहा है। युवावर्ग की पढ़ाई चौपट करने तथा उसे फैशनपरस्त बनाने में इसकी भूमिका से इनकार नहीं किया जा सकता।

आजकल दूरदर्शन पर जिस प्रकार के कार्यक्रमों की भरमार है, उनके कारण छात्रों का नैतिक पतन हो रहा है। विदेशी चैनलों के आ जाने से जिस प्रकार का सांस्कृतिक प्रदूषण हो रहा है, वह अत्यधिक चिंता का विषय है। इन चैनलों पर दिखाए जाने वाले अधिकांश कार्यक्रमों में जिस प्रकार मद्यपान, कामुक दृश्यों, कैबरे नृत्य, चुंबन पाश्चात्य संगीत, हिंसा तथा अर्धनग्न दृश्यों का प्रदर्शन किया जा रहा है, उनके कारण युवावर्ग का नैतिक पतन होना स्वाभाविक है। अतः खेद का विषय है कि जो दूरदर्शन जनजागरण तथा शिक्षा का सशक्त माध्यम था, वही आज नैतिक पतन का कारण बन रहा है। यदि समय रहते ऐसे कार्यक्रमों पर अंकुश नहीं लगाया गया, तो स्थिति नियंत्रण से बाहर हो जाएगी।

5. **निष्कर्ष–** अंत में यही कहा जा सकता है कि दूरदर्शन ज्ञान एवं मनोरंजन का अद्‌भुत साधन है। जिसका सदुपयोग या दुरुपयोग करना मनुष्य के अपने हाथ में है। मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है अतः उससे यही उम्मीद की जा सकती है कि अपने निश्चित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए वह दूरदर्शन का प्रयोग करेगा। अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर देश की उन्नति व समृद्धि में अपना योगदान देगा।

(3) खेल और स्वास्थ्य

संकेत–बिन्दु : खेलों की उपयोगिता • खेल और स्वास्थ्य का सम्बन्ध • हमारा कर्त्तव्य • निष्कर्ष।

1. **खेलों की उपयोगिता–** खेल मात्र खाली समय का सदुपयोग नहीं है, अपितु जीवन की नियमित आवश्यकता है। जिसने दिन में एक बार खेलों को स्थान दिया है, वह जीवन में सदैव खुश रहता है, स्वस्थ रहता है, मजबूत रहता है, बड़ी से बड़ी मुसीबतों में विचलित नहीं होता है। सूरजमुखी के फूल के भाँति चेहरा खिला–खिला रहता है जो लोग खेलों को महत्त्व नहीं देते, वे सदैव गुड़हल की भाँति मुरझाये हुए ही रहते हैं। खेल से मनुष्य में आत्मविश्वास नेतृत्व की क्षमता पैदा होती है, इच्छाशक्ति सदैव बलवती रहती है, संगठन की शक्ति का अहसास होता है। निराशाएँ कभी ऐसे व्यक्ति का पीछा नहीं कर पाती हैं। होठों पर मुस्कुराहट, वार्ता में आत्मविश्वास, मन में उत्साह, स्वस्थ–विचारों का विकास का एक साथ झुण्ड बनाये रहते हैं। इस तरह स्वस्थ शरीर वरदान बन जाता है। अतः खेल स्वास्थ्य का पर्याय है।

2. **खेल और स्वास्थ्य का संबंध–** धन के अभाव में मनुष्य सुख का अनुभव कर सकता है, किन्तु अस्वस्थ रहने पर सुखों का अनुभव तो दूर, सब कुछ सामने होते हुए भी सुखी नहीं रह पाता। इसलिए जीवंत पुरुष यही कहा करते हैं कि मानव को स्वास्थ्य के प्रति सदैव सचेत रहना चाहिए। रोग–व्याधि उससे दूर ही भागते हैं। भौतिक सुखों को तभी प्राप्त किया जा सकता है जब शरीर नीरोग हो। अतः विद्वान कहा करते हैं कि शरीर को स्वस्थ रखने के लिए दवाओं के ढेर रखने से अच्छा है खेलना सीखो, सांसारिक सुखों की अनुभूति करनी है तो हँसना सीखो। हँसना भी खेल का एक हिस्सा है।

स्वस्थ युवक खेल–सामग्री के अभाव में भी खेल सकता है। यह आवश्यक नहीं है कि खेल के लिए विशेष साधन जुटाए जाएँ साधन के अभाव में भी खिलाड़ी कोई–न–कोई खेल ढूँढ़ ही लेते हैं। साथ न मिलने पर भी मस्ती में अकेले भी खेला जा सकता है। पहले बच्चे लकड़ी की गाड़ी बनाकर खेलते थे और आज खेल के साधन बाजार में महँगे दामों पर मिलते हैं। यह सोचकर मत बैठें कि जब तक साधन नहीं होंगे, तब तक कैसे खेलें? बहुत से लोग आज अपने स्तर को बनाए रखने के लिए बच्चों को घर में कैद रखना चाहते हैं, वे खेल के सभी साधन घर में ही जुटा देते हैं, जिससे सामूहिक खेलों से बालक वंचित रह जाता है। घर में खेले जाने वाले खेलों से मानसिक खेल तो हो जाते हैं, किन्तु शारीरिक खेल नहीं हो पाते हैं। शारीरिक खेल तो घर से बाहर सामूहिक रूप से ही सम्पन्न होते हैं। आज क्रिकेट, फुटबॉल, बास्केटबॉल तथा अन्य खेलों के प्रति स्तरीय रुचि सम्पन्न घरों में पैदा हुई है। ग्रामीण अंचल में खेले जाने वाले प्रायः सभी खेल बिना किसी विशेष साधन के खेले जाते हैं। आयुर्वेद में कहा गया है कि खूल भूख लगने पर भोजन का आनंद मिलता है और परिश्रम से पसीना आने में शीतल छाया का आनन्द मिलता हैं। थकान के बाद शीतल छाया में और सामान्य भोजन में जो

आनंद की अनुभूति होती है, ऐसी आनंद की अनुभूति रोगग्रस्त शरीर को विविध प्रकार के व्यंजनों से भी नहीं मिलती है। उदाहरण स्वरूप जो बालक रुचि से खेलता है उसकी पाचन–शक्ति बढ़ती है। दूसरी ओर आलसी बच्चे होते हैं जो टी.वी. पर आने वाले पदार्थों के विज्ञापन की ओर आकर्षक होते हैं तथा उन्हें ही प्रयोग करते हैं। जिन्हें वे सही से नहीं खाते तथा अस्वस्थ हो जाते हैं।

3. **हमारा कर्त्तव्य–** खेलने वाले बच्चों, युवकों के लिए कभी चिकित्सकों की आवश्यकता नहीं पड़ती है। शरीर स्वयं निरोग हो जाता है। खेल हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। हम स्वयं खेलते हुए स्वस्थ रहते हुए दूसरों को भी प्रेरित करें। जब हम हरी सब्जी तथा ताजे फल खाएँगे तो हम स्वस्थ रहेंगे। खेलने व व्यायाम करने से हमारे शरीर का विकास होता है।
4. **निष्कर्ष–** खेल किसी भी देश के युवाओं के लिए प्रतीक है। इससे देश के लोग स्वस्थ और युवा रहते हैं। एक आलस पूर्ण और निष्क्रिय राष्ट्र कभी भी उन्नति नहीं करता है। इसीलिए देश का विकास शारीरिक व्यायाम और खेल कूद पर बहुत निर्भर करता है।

12. अपने पिताजी को पत्र लिखिए जिसमें शैक्षिक यात्रा में जाने की अनुमति तथा 3500/– माँगने का अनुरोध हो। 5

उत्तर :

परीक्षा भवन
विजय नगर, कोटा
दिनांक– 25 सितंबर, 2019
पूज्य पिताजी,
सादर चरण स्पर्श!

आपका भेजा हुआ पत्र मिला। पढ़कर खुशी हुई कि आप सभी सकुशल हैं। मैं भी यहाँ सकुशल रहकर अर्द्धवार्षिक परीक्षा की तैयारी में लगा हूँ।

पिताजी इस दशहरे की छुट्टियों में एक सप्ताह के लिए विद्यालय की ओर से टूर जा रहा है। जिसका उद्देश्य भ्रमण कम शैक्षिक अधिक है। इसमें साठ (60) छात्र, चार अध्यापक तथा दो व्यायाम शिक्षक भी जा रहे हैं। इस टूर में माइसोर, कोन्नूर व ऊटी आदि स्थानों को दिखाया जाएगा। ये स्थल एक ओर स्वास्थ्य के लिए लाभदायी हैं तो दूसरी ओर सामाजिक अध्ययन व भूगोल की दृष्टि से विशेष लाभदायी होंगे। इस अवधि में पढ़ाई का भी कोई नुकसान नहीं होगा। इस शैक्षिक भ्रमण के लिए आपकी लिखित अनुमति व 3500/–की आवश्यकता है। मुझे विश्वास है कि इसमें शामिल होने के लिए आप सहर्ष अनुमति देंगे। पूज्य माताजी को सादर स्पर्श तथा प्रिया को स्नेह। पत्रोत्तर शीघ्र दीजिएगा।

आपका आज्ञाकारी पुत्र
रमेश

अथवा

कुछ असामाजिक तत्व आपके मोहल्ले में रात–भर जुआ खेलते हैं तथा हंगामा करते हैं। इनकी शिकायत करते हुए क्षेत्र के थानाध्यक्ष को पत्र लिखिए।

उत्तर :

विकासपुरी, नई दिल्ली
सेवा में,
थानाध्यक्ष महोदय,
विकासपुरी, नई दिल्ली।
दिनांक– 13 नवंबर, 2019
विषय– असामाजिक तत्त्वों के सम्बन्ध में।
महोदय,

मैं आपका ध्यान अपने मोहल्ले की तरफ आकर्षित करना चाहता हूँ जहाँ रात–भर कुछ असामाजिक तत्त्व जुआ खेलते और शराब पीते हैं। उनकी इस हरकत ने आम आदमी की नाक में दम कर रखा है। वे गाली–गलौच करते हैं तथा महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार करते हैं। उन्हें टोकने पर वे हाथापाई पर उतर आते हैं। उनका ऐसा व्यवहार बच्चों पर बुरा प्रभाव डालता है। इससे मोहल्ले में भय व्याप्त है।

अतः आपसे प्रार्थना है आप इस क्षेत्र में पुलिस की गश्त बढ़ाएँ तथा ऐसे लोगों को गिरफ्तार करके यहाँ शांति का माहौल स्थापित करने का कष्ट करें। आपके सहयोग करने के लिए हम मोहल्ले वाले आपके आभारी रहेंगे।

धन्यवाद,
भवदीय,
विकास पाठक

13. पिता द्वारा पुत्र के पढ़ाई की ओर ध्यान न देने पर उसे डाँटते हुए पिता–पुत्र का संवाद लिखिए– 5

उत्तर :

पिता– बेटा आनंद! कहाँ से आ रहे हो?
आनंद– पिताजी! खेल कर पार्क से आ रहा हूँ।
पिता– तुम कितने बजे खेलने गए थे?
आनंद– जी पिताजी 5 बजे खेलने गया था।
पिता– और अब 7 बजे आ रहे हो।
आनंद– जी, हाँ अब 7 बज रहे हैं।
पिता– बेटा! तुम पढ़ाई कब से कब तक करते हो?
आनंद– 7:15 बजे से 8:15 तक।

पिता– यह तो बहुत ही कम समय है। पढ़ाई का समय कम से कम तीन घण्टे का तो होना चाहिए, अन्यथा परीक्षा परिणाम प्रभावित होगा।

आनंद– जी, पिताजी! कल से पूरे तीन घण्टे तक पढ़ूँगा। चार से पाँच बजे तक खेलूँगा।

पिता– इस समय खेल कम पढ़ाई ज्यादा जरूरी है। तुम्हारी परीक्षा होने में दो माह शेष हैं।

आनंद– जी, पिताजी! मैं पूरी लगन और अथक परिश्रम से पढ़कर अच्छा परीक्षा परिणाम लाऊँगा।

पिता– इस वर्ष कक्षा IX की परीक्षा है, अगले वर्ष X की बोर्ड परीक्षा देनी होगी। अतः एकलव्य की तरह परीक्षा–परिणाम के उच्चतम अंकों को प्राप्त करने में प्रयासरत हो जाओ।

अथवा

नरेन्द्र की बेंगूलर–से दिल्ली जाने की यात्रा का टिकट राजधानी IInd ए. सी. में वेटिंग में हैं। आप स्टेशन पर टिकट खिड़की पर बाबू से अपना टिकट आर. ए. सी. में कराने की बात कह रहे हैं। इस विषय पर संवाद लिखिए।

उत्तर :

नरेन्द्र– सर! एक रिजरवेशन फार्म दे दीजिए।

बाबू– जी, ये लीजिए रिजरवेशन फार्म भर दीजिए।

नरेन्द्र– सर! मुझे बेंगुलूर से दिल्ली राजधानी IInd ए.सी. में एक सीट चाहिए। देखिए तारीख 5, 6, 7 या 8 दिसम्बर में किस दिन 1 सीट मिल सकती है?

बाबू– (देखकर बताता है) इन तारीखों में तो वेटिंग आ रहा है।

नरेन्द्र– मुझे इन्हीं दिनों में दिल्ली में बहुत जरूरी काम से जाना है। अतः टिकट कैसे हो सकता है। कृपया देखिए।

बाबू– अभी तो 15 दिन शेष हैं आपको जाने में तब तक प्रतीक्षा सूची की स्थिति बदल सकती है।

नरेन्द्र– यह बात निश्चित रूप से हो सकती है क्या?

बाबू– हाँ सर! अगर कोई अपनी यात्रा रद्द करेगा तो ऐसा ही होगा।

नरेन्द्र– कितने दिन में पता लगेगा?

बाबू– आप अपने टिकट पर जो पी.एन.आर. नम्बर है उसी दिन ट्रेन नम्बर एवं तारीख डालकर देख लेना। आपको आपकी सीट की वास्तविक स्थिति पता लग जाएगी। लेकिन यह आप 10 दिन बाद देखना।

नरेन्द्र– जी सर! अच्छी बात है। धन्यवाद।

Download unsolved Version of this solved paper from www.cbse.online

WWW.CBSE.ONLINE

This sample paper has been released by website www.cbse.online for the benefits of the students. This paper has been prepared by subject expert with the consultation of many other expert and paper is fully based on the exam pattern for 2019-2020. Please note that website www.cbse.online is not affiliated to Central board of Secondary Education, Delhi in any manner. The aim of website is to provide free study material to the students.